सावन और जल

सावन-घन

हर्षकुमार 'हर्ष'

सावन-घन चक्र धरा का है नव जन्म मिले हरियाली को।
जल से भर दे नदियाँ नाले हर ताल-तलैया खाली को।।
आधारित सावन पर जग की कुल मुद्रा-स्फीति चलती है।
धन-धान्यों को उपजाता है खुश करता कृषक स्वाली को।।

घन गगन में उमड़ा लगता है ज्यों मस्त हाथियों की टोली।
या काली मिट्टी के पर्वत भैरव दानव सँग हमजोली।।
छाया का बेटा शनिदेव या मंद अमावस का घेरा।
बादुर-बिजुरी के संगम की भयभीत सँहारक है बोली।।

सावन आये बदरा लाये बदरा वर्षा का सागर है।
तपती धरती को शीत करे प्यासे हित जल की गागर है।।
बाँटे जल-पूँजी उमड़-घुमड़ सीमा-मर्यादा क्या जाने।
कभी रिमझिम मूसलाधार बहे कभी आँधी बिजुरी बादर है।।

नभ में उड़ती जाती बदली फैली ज्यों झोंपड़-पट्टी हो।
इक युवती बिना नहाई सी दिखने में हट्टी-कट्टी हो।।
जब यौवन की खुशियाँ झरती तब इंद्र-धनुष बन जाती है।
जब बहे वियोगी पीड़ा बन तब भड़भूँजन की भट्टी वो।।

मैली सी फटी चुनरिया को वो दूर उफक में फहराये।
या कासा किसी भिखारिन का बिन पेंदा लुड़क-लुड़क जाये।।
पुरवा सँग मस्ती अठखेली कर कामुक होकर बरस पड़े।।
और आग बुझाकर तन-मन की थक कर शीतल सी हो जाये।।

जल-संकट

जल में जीवन जीवन में जल
गहरा भेद समझना होगा
रक्त सरीखा मँहगा जल है
संयम सहित निपटना होगा।।

जल का संकट गहराता है
जल का संकट हुआ गम्भीर
छोड़ो व्यर्थ बहाना इसको
अपनी आप बुनो तकदीर।।

इसके कारण उपवन सूखे
पशु-पक्षी हो लिये उदास
मरू में बदल रही है माटी
अब करो बचाने के प्रयास।।

बर्तन धोये पानी से तुम
पौधों को बहला सकते हो
कपड़े धुले मलिन पानी को
सीवर बीच बहा सकते हो।।

टब में बैठ नहाओगे तो
पानी खूब बचा सकते हो
घर में पोचा फर्श धुलाई
वाला काम चला सकते हो।।

बूँद-बूँद बहता जल रोको
छाया में गमले रख लेना
हाथ कटोरे भीतर धोकर
पशु-पक्षी को नहला देना।।

बिन पानी सब सून रहीमा
बिन पानी सब सून दोस्तो
अद्भुत धरा, गगन, वनस्पतियाँ
मोती मानस चून दोस्तों।।

सावन आया

सालों बाद
हँसी है पुलिया
गलियों-बाजारों से बहता
सावन आया, सावन आया।।

नदिया
गर्भवती हो झूमी
पतिपरमेश्वर
तट ठिठियाया, तट ठिठियाया।।

नदी किनारे
तप करता वह
बूढ़ा शीशम कामातुर हो
पल्लू पकड़े
भागा आया, भागा आया।।

राह दिखाने
विद्युत कौंधी
डबरा-डबरा बनीं रँगोली
कागद की नावें तैराने
बच्चा आया, बच्चा आया।।

पानी की यह अजब कहानी
हर किसान घर-घर ने जानी
संयम से बरते अब पानी
पंख झुलाते
मयूरा आया, मयूरा आया।।

धरती का जल

बार-बार छींके था बदरा
पवनों को जुकाम ने मारा
पूणों ने मावस थी ओढ़ी
आज विवश हो श्रावण-शुकला
फटी-फटी फैलाती झोली।।

जलकण-जलकण बीज बिखरते
धरती माँ की कोख भरेगी
धन-धान्य और दूध बढ़ेगा
भुखमरियों की बनी ठिठोली।।

धीरे-धीरे अंधी होकर
गाँधारी की पट्टी बाँधे
इधर-उधर आँधी टकराई
खिड़की-दरवाजे थर्राए।।

वारिद दूर उड़ा ले भागा
वर्षा की गिरती बूँदों को
बाजू पकड़े, बाजू पकड़े
उमड़-घुमड़ते नभ तल-नभ तल
गले मिले अँगड़ाए।।

धरती के गीले बालों पर
इंद्रधनुषिया चूनर फैली
भोर ने ताली पीट उड़ाए
बगुलों की माला पहना दी।।

रवि किरणों ने माँग सजा दी
ताल तड़ाग फैला पावन जल
वसुधा ने चूसा-चुसवाया
थकी मृगा की प्यास मिटा दी।।

संपर्क करें:
हर्षकुमार 'हर्ष'
781-एस. एस. टी. नगर,
पटियाला, पंजाब
पिन-147003
मो.नं. 09316227766, 09464470217